

| | |
|----|---|
| ६ | मन्त्रे धान्याज्ज्या मन्त्रसामर्थ्येन वृद्ध्युक्तिः (धान्यमसौत्या- दिना) (सं०१२३) ८१ |
| ७ | तण्डुलपेषणप्रकारः (प्राणायेत्यादिना) (सं०१२४) .. ८२ |
| ८ | बाक्कोरन्ववेक्षणम् (दीर्घामन्त्रित्यादिना) (सं०१२४) ८२ |
| ९ | कृष्णाजिने पिष्टानां प्रस्कन्दनम् (अन्तरिक्षादित्यादि- ना) (सं०१२५) ८२ |
| १० | पत्नीदास्यन्यतरामुद्दिश्य प्रैषमन्त्रोक्तिः (असंवपन्तीत्या- दिना) (सं०१२५) ८२ |

७ अनुवाके कपालोपधानम् ।

| | |
|---|--|
| १ | मन्त्रे उपवेष्टाख्यपलाशकाष्ठादानम् (धृष्टिरसौत्यादिना) (सं०१२८) ८२ |
| २ | अङ्गारद्वयनिष्काशनपूर्वकमेकस्य निरसनम् (अपाय इत्यादिना) (सं०१२८) ८२ |
| ३ | कपालेऽङ्गारात्याधानम् (निर्दग्धमित्यादिना) (सं०१२९) ८२ |
| ४ | कपालोपधानविधानम् (अग्निवत्युपदधातीत्यादिना) (सं०१२९) ८२ |
| ५ | अङ्गारोपरिकपालोपधानम् (अङ्गारमधिवर्त्तयतीत्या- दिना) (सं०१२९) ८२ |
| ६ | अङ्गारोपर्यङ्गारस्थापनाभावे दोषाभावः (आदित्य- मेवेत्यादिना) (सं०१२९) ८३ |
| ७ | उक्तवृत्तान्तज्ञानप्रशंसा (ज्योतिष्मन्त इत्यादिना) (सं०१२९) ८३ |
| ८ | कपालस्योपधानमन्त्राः (ध्रुवमसि पृथिवी दृष्ट्वेत्या- दित्यादिना) (सं०१३०) ८३ |